किसानोंकी कामधेनु

संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

(माधुरी-संपादक)

कृषि-संबंधी उत्तमोत्तम पढ़ने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
उद्यान	॥।)
भारत में कृषि-सुधार	१॥।)
कृषि-शास्त्र	२)
कृषि-कौमुदी	१)
,,	॥)
कृषि-मित्र	।-)
कृषि-कोष	१)
कृषि-विद्या (दो भाग)	॥-)
मूँगफली	=)
ईख	।-)
सचित्र कपास की खेती	३)
खाद और उसका व्यवहार	।)
खाद का उपयोग	१)
धान की खेती	≡)
,, ,,	।)
कपास की खेती	॥)
मूँगफली की खेती	-)
केला	-)
मक्का की खेती	१)
अफ़ीम की खेती	।)
खेती पौंडा-गन्ना-ऊख	॥)
बाग़बानी	॥)
संकरीकरण (पेबंद, कलम चढ़ाना)	-)
लाख की खेती	१)
वनस्पति-शास्त्र	२)
नींबू-नारंगी	=)
फ़सल के शत्रु	।=)
गेहूँ की खेती	॥=)
खेत	॥।)
खाद	१)
कृषि-सार	१)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

संचालक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला का बयालीसवाँ पुष्प

किसानोंकी कामधेनु

लेखक

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री

"कृषि-विज्ञान भूमि को करता

कामधेनु यह ध्यान धरो।"

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सं० १९८१ वि० [सादी ।=)

प्रकाशक
श्रीछोटेलाल भार्गव बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०
गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीकेसरीदास सेठ
नवलकिशोर-प्रेस
लखनऊ

किसानोंकी कामधेनु

अथवा

किसानोंको सुखी और मालामाल बनाने-के कुछ उपाय

किसान भाइयो, क्या तुमने अपने दुःखोंके कारणोंको ढूँढ़नेका कभी यत्न किया है ? या उनको अपने भाग्यका फल मानकर चुपचाप सहते चले जाते हो ? मैने तुम लोगों-की दशाको देखकर जहाँ तक विचार किया है वहाँ तक मेरी समझमें यही बात आती है कि तुम लोग अपने दुःखों-को अपने नसीबका फल मानकर ही चुप रह जाते हो । तुम लोग अपने दुःखोंके कारणोंको ढूँढ़नेका कभी विचार तक नहीं करते, उनको दूर करनेका यत्न तो बहुत दूरकी बात है । दुःखोंको सहते-सहते अब तुमको वे मँज-से गए है, तुमको उनके सहनेकी आदत-सी पड़ गई है । अब तुमको यही नहीं मालूम होता कि वे दुःख हैं !

तुम पचास रुपए लगानकी ज़मीन जोतते हो । उसको जोतने, बोने, फ़सलकी रखवाली करने, काटने, मींजने उड़ाने

आदि कामोंको बड़ी मेहनत और मजूरीके साथ करते हो। पर उससे तुमको खाने-पीने, पहनने-ओढ़नेका वह आराम नहीं मिलता जो तहसीलके दस-पंद्रह रुपए माहवारी तनख़्वाह पानेवाले चपरासीको मिलता है। तुमको न पेट-भर दोनों समय खानेको अन्न ही मिलता है, न काफ़ी कपड़े ही मिलते है, न रहनेके लिये साफ़-सुथरे हवादार घर ही मिलते है, और न बीमार होनेपर अच्छी दवा ही मिलती है। बीमार होनेपर खटमल और मच्छरोंके समान मरना पड़ता है। कहो तुम्हारी आजकलकी इस दशाके विषयमें मेरा यह कहना सच है या झूठ? तुम लोगोंको आज मेरे याद दिलानेसे कहना होगा कि मैंने तुम्हारे दुःखोंकी जो अभी चर्चा की है, वह अक्षर-अक्षर सची है। पर उनको भोगते-भोगते तुम लोगोंकी ऐसी आदत पड़ गई है कि तुम लोगोंको उनसे बचनेकी बात ही नहीं सूझती। अच्छा, तो लो, आज मैंने तुमको तुम्हारे दुःखोंकी जो बातें सुनाई है, उनके कारण भी बताता हूँ। उनको कान लगाकर ध्यान देकर सुनो, और समझो। तुम्हारे दुखोंको दूर करनेके मैं जो उपाय बताता हूँ, उनको भी समझ लो—खूब समझ लो—वे अभी कुछ अड़बड़ और कठिन जान पड़ें, तो उनसे डरो मत, घबराओ मत। यह मत मान लो कि ऐसा किसीने किया है, या किसीने भले ही किया हो, हमसे वह कैसे किया जा सकेगा।

अपने दुःखोंके कारणोंको सुनो। यों तो तुम्हारे दुःखो-के कारण अनेक हैं, पर उन सबमें बड़ा कारण तुम्हारी **फ़सलोंकी उपजका कम होना** ही है। तुम्हारी फ़सलो-की उपज दिन-दिन कम होती जाती है; पर तुम उसको अपने नसीबका फल मानकर चुप रह जाते हो। बात छिड़नेपर तुम यह ज़रूर कहते हो कि जब तुम लड़के थे, तब तुम्हारे खेतोंमें गेहूँ, अलसी, तिल्ली, कपास आदि कीमती फ़सलोंकी बहुत ज़्यादह उपज होती थी; पर अब उतनी उपज नहीं होती। अब तो गेहूँकी उपज पाँच-छःगुनीसे भी कम ही होती है। उसी प्रकार अलसी, तिल्ली और कपासकी भी फ़सल कम होती है। इतना कहकर तुम चुप हो जाते हो और कम उपजके कारण होनेवाले दुखो और कष्टोंको खोटे नसीबका फल मानकर भोगते जाते हो। प्यारे किसान भाइयो, तुम्हारे खेतोंकी आजकलकी कम उपज तुम्हारे खोटे भाग्यका कड़ुआ फल नहीं है। वह है तुम्हारे किसानी-के बारेमें अज्ञानका कड़ुआ फल। तुमने यह मान रक्खा है कि धरतीको जैसे हमारे बड़े-बूढ़े जोतते आए हैं, वैसे ही हम भी जोतते हैं। उनको वह जैसी उपज देती थी, वैसी ही उसे हमको भी देना चाहिए। पर वह उनको जितनी उपज देती थी, उतनी तुमको जो नहीं देती, इसके कारण अवश्य हैं। हाँ, तुम उनको अपने अज्ञानके कारण नहीं जानते। तुमने

मान रक्खा है कि जिस प्रकार तुम खेती करते हो, उसी प्रकार सदा वह की जाती है। पर बात ऐसी नहीं है। सच बात तो यह है कि जिन खेतोंको जोतते-जोतते बूढ़े होकर तुम्हारे बड़े-बूढ़े मर गए उन खेतोंकी फ़सल पैदा करनेवाली शक्ति भी बूढ़ी होकर मरनेके योग्य हो गई है। तुम इस बातको जानते नहीं। इसीलिये तुम्हारे खेतोंकी उपज दिन-दिन घटती जाती है, और तुम लोग दिन-दिन दुखी होते जाते हो।

जैसे तुम लोगोंमें अभी जिन बूढ़ोंको खाने-पीनेको अच्छे भोजन मिल जाते हैं, वे अच्छी दशामें हैं, वैसे ही जिनके खेतोंको, कभी भूले-भटके कुछ खाने-पीनेको मिल जाता है—खाद, सींच, या सूखेके सालमें पड़ती होनेका अवसर मिल जाता है—उनके खेत सँभल जाते हैं। बाक़ीके ख़राब होते जाते हैं। देखो, घरमें भोजन तैयार किए जानेके लिये तुमको गेहूँ, चावल, दाल, निमक, मिर्च, घी आदि चीज़ें घरके लोगोंको पहले दे देनी पड़ती हैं, तब घरके लोग उनसे तुम्हारे भोजन-पदार्थ तैयार कर सकते हैं। तुम उन चीज़ोंको उन्हें न दो, तो वे तुम्हारे लिये भोजन तैयार नहीं कर सकते, और तुम भोजन खाए बिना अपना काम नहीं कर सकते। ठीक वही बात तुम्हारे खेतोंके बारेमें भी है। खेतोंके नीचे, उनके पेटमें, जब जल, वायु, प्रकाश, और दूसरी-दूसरी खादें पहुँचाई जाती हैं, तब वहाँ रहनेवाले छोटे-छोटे जीव-जंतु उस सामग्रीसे उन

भोजनोंको तैयार करते रहते हैं, जिनको फ़सलकी जड़ें चूस-कर पौधेको बढ़ाती और खासी उपज पैदा करनेमें उन्हें समर्थ बनाती हैं। तुमने खेतमें थोड़ा-सा हल-बखर चला देना और बीज बो देना-भर सीख रक्खा है। बाक़ी बातें भूल गए हो। इसी कारण तुम्हारे खेतोंकी उपज कम होती जाती है।

सुनो, खेतोंमें, उनके नीचे, पूरा-पूरा वर्षाका जल, वायु, प्रकाश और खाद पहुंचानेके लिये उनकी खासी जुताई की जानी चाहिए, और उनको खूब खाद देनी चाहिए।

खेतोंकी अच्छी जुताई करने और उन्हें पूरी-पूरी बढ़िया खाद देनेके लिये ईश्वरने तुमको गउएँ दे रक्खी हैं। पर तुम उनको इतनी लापरवाहीसे रखते हो कि उनसे पूरा लाभ नहीं उठा सकते। अब अपनी गउओंके लालन-पालनकी विधि भी सुन लो। उसे एक कानसे सुनकर दूसरे कानसे निकाल मत दो। उसके अनुसार काम करो, और फिर देखो, तुम्हारी खेतीकी उपज कैसी बढ़ती है।

यह बात तो तुमको मालूम ही होगी कि जो चीज़ घर-पर बनाई जाती है, वह सस्ती पड़ती है। यही बात तुम्हारे खेतीके बैलोंके बारेमें भी है। तुम अपनी गउओंका पालन अच्छी तरह नहीं करते, इसीलिये तुमको बहुत महँगे बैल ख़रीदने पड़ते हैं। महँगे होनेके कारण तुम पूरे-पूरे और अच्छे बैल ख़रीद नहीं सकते। बैल बड़े-बड़े और पूरे-पूरे— काफ़ी—

न होनेके कारण समयपर खेतोंकी जैसी चाहिए, वैसी जुताई नहीं हो सकती। जुताई जैसी और जितनी की जानी चाहिए, वैसी और उतनी नहीं की जाती, इसीलिये खेतोंमें पूरी-पूरी उपज नहीं होती। जब जुताई खूब गहरी की जाती है, और खेतोंके ऊपरकी मिट्टी मैदेके समान नरम और बारीक कर दी जाती है, तभी खेतोंकी मिट्टीके प्रत्येक कणमें हवा, प्रकाश और गरमीका पूरा-पूरा प्रवेश हो सकता है; तभी वर्षाका जल खेतोंके नीचे पहुँच सकता है; तभी वह जल खेतोंके नीचे—उनके पेटमें—पहुँचकर वहाँ पौधोंकी जड़ों-के लायक़ पतला भोजन तैयार कर सकता है। मतलब यह कि बिना खेतकी पूरी-पूरी जुताई किए उसकी उपज बढ़ नहीं सकती। पूरी-पूरी जुताई तभी हो सकेगी, जब प्यारे किसान भाइयो, तुम्हारे पास अपने घरपर अपनी गउओंसे पैदा किए हुए बैल होंगे। ऐसे बैल तुमको बड़ी आसानीसे मिल सकते हैं। वे सस्ते भी पड़ेंगे, और तुम्हारा काम भी खूब करेंगे। प्यारे किसान भाइयो, तुमको किसानीके रोज़गारसे जो दो पैसे कमाकर अपने बाल-बच्चोंको आराम और सुखसे पालना है, तो सबसे पहले अपनी गउओंकी ख़ासी सेवा करो। उनसे तुमको अनेक लाभ होंगे। जैसे—उनसे तुमको खूब दूध मिलेगा, मक्खन मिलेगा, खेती करनेको बलवान् और काफ़ी बैल मिलेंगे, और तुम्हारे खेतोंकी पैदावारको बनाए रखनेके लिये

सबसे बढ़िया खाद मिलेगी। तुम्हारी गउएँ बूढ़ी हो जानेपर तुमको दूध, मक्खन और बैल भले ही न दे सकें पर तुम्हारे खेतोंके लिये वे खाद मरते दम तक दे सकती हैं। कहो, वे तुम्हारा कितना उपकार कर सकती हैं? तुम जो उनसे अपने ये लाभ नहीं उठाते, तो इसमें दोष किसका है? इसमें दोष न तो ईश्वरका है और न बेचारी गउओंका ही। इसमें दोष है, तो वह अकेले तुम्हारा ही। अपना पग-पगपर उपकार करनेवाले गऊके समान प्राणीको पाकर भी तुम उससे लाभ नहीं उठाते। अब मेरी बात मानकर अपने मनमें यह ठान लो कि आजसे हम अपनी गउओंकी पूरी-पूरी यथा-विधि सेवा करेंगे। अगर तुम यह मनमें ठान लोगे, और गउओंकी खासी सेवा करोगे, तो तुम्हारी खेतीकी उपज बहुत बढ़ जायगी, और उससे तुम तथा तुम्हारे बाल-बच्चे सदा बहुत सुख पाते रहेंगे।

प्यारे किसान भाइयो, अब गउओंके पालनेकी रीतिको सुनो—

तुम्हारे पास जो बड़ी-बड़ी गउएँ हों, उनको छाँटकर अलग कर लो। बड़ी गउओंको अलग रक्खा करो, और छोटी गउओंको अलग।

गउओंको ऐसे घरोंमें रक्खा करो, जहाँ तीनों ऋतुओं-में हवा और प्रकाश पूरा-पूरा रहता हो। उन घरोंको प्रति-

दिन झाड़-बुहारकर साफ़-सुथरा रक्खा करो। ऐसे घरोंमें रहनेसे गउओंको पिस्सू और किलनियाँ नहीं सता सकतीं।

अपनी गउओंको प्रतिदिन दिनमें तीन बार शुद्ध और स्वच्छ जल पिलाया करो। गउएँ पानी बहुत पीती हैं। उनको प्यास लगने पर जब शुद्ध जल नहीं मिलता, तब वे नालीका मैला पानी पी लेती हैं। इस मैले पानीके पीनेसे उनका दूध ख़राब और कम हो जाता है। इसलिये उनको सदा साफ़, स्वच्छ जल दिनमें तीन बार पिलाना चाहिए।

गउओंको पेट-भर पुष्ट चारा और दाना देना चाहिए। गेहूँका भूसा खिलानेसे उनका दूध कम हो जाता है; क्योंकि भूसेमें सार नहीं रहता। उसके सब सारको खेतोंमें पैदा होते समय गेहूँ खा लेते हैं। इस कारण गउओंको खिलानेके लिये तुमको अपने खेतमें हरा और पुष्ट चारा पैदा करना चाहिए। यह बात तुमको अभी कुछ अटपटी-सी ज़रूर जान पड़ेगी; पर जब तुम इसके मतलबको समझकर अपने खेतोंमें अपनी गउओं और बैलोंके लिये पुष्ट चारा पैदा करने लगोगे तब तुमको यह बात एक सीधी-सादी-सी मालूम होने लगेगी। आगे चलकर मैं इसके पैदा करनेकी रीति भी तुमको बताऊँगा।

गउएँ जब दूध देती हों, तब उनको उड़द, चने, अरहर आदिका दाना, बिनौले, अलसी, तिल्ली और मूँगफली आदि-

की खली भी देनी चाहिए। इन खलियोंसे गउओंका दूध बढ़ता है, उनके मक्खनकी मात्रा बढ़ती है, और साथ ही उनके गोबर और मूतमें तुम्हारे खेतोंकी उपजाऊ शक्ति बढ़ानेकी मात्रा भी बढ़ती है।

जब गउएँ दूध देना बंद कर दें, तब भी उनको थोड़ा-थोड़ा दाना देते रहना चाहिए।

गऊके बियानेके पाँच महीने बाद उसको अच्छी जाति-के साँड़से मिलाकर गाभिन करा देना चाहिए। ऐसा करने-से तुमको उससे कम से-कम बारह महीने तक दूध मिलता रहेगा, जिससे उसके दाने-चारेके दाम वसूल होते रहेंगे।

जो गऊ सबसे अधिक दूध देती हो, उसीके बच्चेको साँड़ बनाना चाहिए। ऐसे साँड़से गाभिन होनेवाली गउएँ खुद अधिक दूध देती हैं; और उनकी बछिया तो उनसे भी अधिक दूध देती है। ऐसा क्रम जारी रक्खोगे, तो पाँच-सात सालमें तुम्हारे घरपर ऐसी गउएँ तैयार हो जायँगी, जो रोज बीस-पचीस सेर दूध देंगी, और उनसे ऐसे सुंदर, सुडौल और मज़बूत बैल तैयार होंगे, जो तुम्हारे खेतोंकी खासी जुताई कर सकेंगे।

गउओंके समान उनके बछड़ोंकी भी देखभाल और सँभाल बहुत चतुराईसे करनी चाहिए। एक उमरके बच्चे एकसाथ रखने चाहिए। उनको भी पेट-भर चारा-दाना और स्वच्छ जल देना चाहिए।

पशुओंको किसी प्रकारकी बीमारी होते ही बीमार पशु-को अलग रखकर उसकी दवा करनी चाहिए। ऐसा करने-से वह शीघ्र अच्छा हो जाता है, और दूसरे पशुओंको उसकी बीमारी लगने नहीं पाती।

गउओंको, उनके बछड़ों और बैलोंको ऋतुके अनुसार स्नान करवाते रहना चाहिए।

गउओंको स्वच्छ स्थानमें दुहना चाहिए। गोबर और मूत्रकी गंधसे दूध फट जाता है। जैसे मनुष्यको मल-मूत्रसे दूषित स्थानमें रहना अच्छा नहीं लगता, वैसे ही गउओंको भी गोबर और मूतसे भरे हुए स्थानोंमें रहना अच्छा नहीं लगता। ऐसे दुर्गंध-भरे स्थानोंमें रहनेसे उनके दूधकी मात्रा घट जाती है।

गउओंको दुहनेके पहले उनपर बड़े प्यारसे हाथ फेरना चाहिए। उनपर क्रोध नहीं प्रकट करना चाहिए। उन्हें गाली नहीं देनी चाहिए। उन्हें मारना भी नहीं चाहिए। मारने, गाली देने या क्रोध करनेसे उनका दूध घट जाता है। यह बात सोलहों आने सच है।

दूध देनेवाली गउओंको दूर चरनेके लिये नहीं जाने देना चाहिए। उन्हें घरपर ही चारा देना चाहिए। मगर एकदम घरपर बाँध भी नहीं रखना चाहिए। रोज़ उन्हें दो-एक मील फिरा लाना चाहिए।

बहुत दूध देनेवाली गऊ कम दूध देनेवाली गऊके बच्चे-से बने हुए साँड़से जब गाभिन होती है, तब उसका दूध कम हो जाता है । और, दो-चार बार इस प्रकार गाभिन होनेसे वह बाँझ भी हो जाती है । इसलिये हे किसान भाइयो, आज तक तुमने इस विषयमें जो लापरवाही कर रक्खी है, उसे अब एकदम छोड़ दो, और अपनी गउओंको साँड़से मिलानेमें बहुत सावधान रहा करो ।

प्यारे किसान भाइयो, संभव है, तुम लोग मेरी इन बातों-को सुनकर मन-ही-मन मुझे हँसो और कहो कि हम इतना चारा-दाना कहाँ पावें, जितना गउओंको खिलानेके लिये आप बता रहे हैं ? गउओंको इतना दाना खिला देंगे, तो हम अपने बाल-बच्चोंको क्या खिलावेंगे ? तुम लोगोंका यह कहना तुमको ठीक मालूम होता होगा ; क्योंकि आज तक तुमने कभी इस बातपर विचार ही नहीं किया कि जिन बैलों-से तुम खेती करके अपने खानेके लिये अन्न और अपने कपड़ों-के लिये रुई पैदा करते हो, उनके खाने-पीनेके लिये भी तुम्हें धरतीसे दाना-चारा पैदा करना चाहिए । तुमने उनके हक़को एकदम ठुकरा दिया है । उनके हक़की धरतीपर भी तुमने अपना हक़ जमा लिया है । आज तुमको इसी प्रचंड भूलका यह कड़ुआ फल चखना पड़ रहा है कि रात-दिन मेहनत और परिश्रम करते रहनेपर भी भर-पेट भोजन

नहीं मिलता । अब अपनी भूलको सुधारो, और गो-वंशको उसके हिस्सेकी धरती दे दो । उसमें उनके लिये दाना-चारा पैदा करो, और उनका उसे उपभोग करने दो ।

सबसे सीधा और सरल उपाय तो यह है कि तुम्हारे पास जितनी धरती हो, उसे बराबर तीन भागोंमें बाँट डालो । एक भागमें उन क़ीमती चीज़ोंको बोया करो, जिनकी माँग हो । उनकी उपजको बेचकर अपनी धरतीका लगान दिया करो, और साहूकारोंको जो देना हो, वह अदा करो । दूसरे हिस्सेमें उन चीज़ोंको बोया करो, जिनकी तुम्हें अपने घरके काममें आवश्यकता पड़ती हो । घरकी खेतीमें पैदा की हुई चीज़ें शुद्ध और सस्ती हुआ करती हैं। तीसरे हिस्से में अपनी गउओं और बैलोंके लिये दाना-चारा पैदा किया करो। ऐसा करनेसे तुम्हारे गो-वंशको पूरा-पूरा चारा-दाना सस्तेमें मिला करेगा ।

गो-वंशके हक़की ज़मीनमें अभी तुम गेहूँ, कपास, संतरा और अलसी-जैसी क़ीमती फ़सल पैदा करके जो समझते हो कि तुम बहुत धन पैदा करके मालामाल हो रहे हो, यह तुम्हारा समझना कोरा भ्रम ही है; क्योंकि गो-वंशका उचित पालन न होनेके कारण धरतीकी उचित सेवा तुम नहीं कर सकते । उसका बुरा नतीजा यह हो गया और हो रहा है कि तुम्हारे खेतोंकी उपजाऊ शक्ति नष्ट हो गई है, और

दिन-दिन वह अधिकाधिक नष्ट होती जाती है। इस बुरी आफ़तसे अपनी तथा अपने बाल-बच्चोंकी रक्षा करनेके लिये तुम्हें उचित है कि तुम गो-वंशके हिस्सेकी धरतीपर उनके लिये चारा-दाना पैदा करना आरंभ कर दो। तुम्हारे ऐसा करनेसे संभव है, सरकार गो-वंशके हक़की धरती-पर लगान बाँधना बंद कर दे, जैसा कि उसने मदरास-प्रांतके नेलोर स्थानमें किया है। नेलोरमें सन् १८६७से गोचर-भूमिका कर उठा दिया गया है, और साथ ही यह नियम कर दिया गया है कि किसानोंकी धरतीकी फ़ी सदी ३० हिस्सा धरती गाँवमें गोचरके लिये रक्खी जाया करे।
(Cow-Keeping in India, page 305)

अभी थोड़े दिनोंकी बात है कि अमेरिकाके एक किसान-ने एक साल अपने जोतकी एक एकड़ धरतीमे घोड़ेकी लीदकी खाद देकर एक मन गेहूँ बोए थे। उसकी उपज उसको बारह मन मिली। दूसरे साल उसने एक एकड़ धरतीको बकरी और भेंड़की लेंड़ीकी खाद देकर उसमें एक मन गेहूँ बोए। उससे भी उसे लगभग उतनी ही उपज मिली। तीसरे साल उसने एक एकड़ धरतीमें गऊके गोबर और मूतकी खाद देकर एक मन गेहूँ बोए। उससे उसको ५१ मन गेहूँकी उपज मिली। इस उपजको देखकर उसके आनंदकी सीमा नहीं रही। इस अनुभवसे उस किसान-

को मालूम हुआ कि गऊके गोबर और मूतमे धरतीकी उपजाऊ शक्तिको बढ़ानेकी अद्भुत सामर्थ्य है। तबसे उस किसानने अपने खेतोंमें गऊके गोबर और मूतकी खाद अधिक डालना शुरू कर दिया। उसकी देखादेखी उसके पास-पड़ोसके किसानोंने भी अपने खेतोंमे गऊके गोबर और मूतकी खाद देना शुरू किया, और उसकी कृपासे खूब उपज पाने लगे। अब तो उस देशमें गऊके गोबर और मूतकी खादकी चाल इतनी अधिक बढ़ गई है कि उस देशके किसान सौ एकड़ पीछे पंद्रह गउओंका पालना और उनके लिये तेंतीस एकड़में चारा-दाना पैदा करना किसानोंकी उन्नतिके लिये बहुत ही जरूरी समझते हैं। गउओंके गोबर और मूतकी खादकी कृपासे उन लोगों-को गेहूँ-जैसे क़ीमती अन्नकी तीस-बत्तीसगुनी उपज मिलती है। तुम लोग अभी छः-सातगुनीसे अधिक उपज नहीं पाते। योरप-खंड और अमेरिकाके कुछ देशोंकी गेहूँकी उपजका ब्योरा नीचे दिया जाता है—

देशका नाम	एक एकड़में बोया जानेवाला बीज	एक एकड़की उपज
बेलजियम	१ मन	३८ मन
डेनमार्क	,,	३६ ,,
ग्रेटब्रिटन	,,	३२ ,,

जर्मनी	१ मन	३३ मन
फ्रांस	,,	२० ,,
हिंदुस्थान	,,	६-७ ,,

अमेरिकाके किसानोंने गऊके जिन उत्तम गुणोंको अभी कल-परसों जान पाया है उनको हमारे आर्य लोग हजारों साल पहले जान चुके थे। इसीलिये उन्होंने गऊकी सेवा और रक्षा करनेका उपदेश दिया है। भारतके हिंदू गऊके इसी उपकारको मानकर उसकी रक्षाका आग्रह करते है। समयके फेरसे आज दिन हिंदू लोग गउओंकी सच्ची रक्षा करना भूल गए है। गउओंकी सच्ची रक्षा यही है कि उनके उच्च वंशकी संख्या बढ़ाई जाय, उनमें अधिक-से-अधिक दूध और मक्खन पैदा किया जाय, और उनके गोबर और मूतसे धरतीकी उपजाऊ शक्ति बढ़ा-बढ़ाकर देशको अन्न-धन-संपन्न करनेके लिये खूब उपज पैदा की जाय। इस बातकी याद दिलानेके लिये भगवान् श्रीकृष्ण-ने कुरुक्षेत्रकी लड़ाईके मैदानमें अर्जुनसे कहा था—अर्जुन, देशके व्यापारियोंको चाहिए कि अपने व्यापारकी उन्नतिके अभिप्रायसे अपने देशकी किसानी और गउओंकी सदैव रक्षा और वृद्धि करते रहा करें—

"कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्मस्वभावजम्।"

देखो तो, इस देश-हितकर उपदेशको हमारे आजकलके

व्यापारियोंने किस प्रकार भुला दिया है। बंबई और कलकत्तेके वैश्योंने वहाँ एक-एक पिंजरापोल खोल रक्खा है। उनमें वे लँगड़ी, लूली, अंधी और उनके निजके स्वार्थ द्वारा बाँझ बनाई गई गउओंकी रक्षा किया करते हैं। सच्ची गोरक्षाकी बात न तो उनके जीमें ही आती है, और न किसीके सुझानेपर उस ओर ध्यान देनेकी ही उन्हें फुरसत है। किसान भाइयो, इन स्वार्थी व्यापारियोंकी बातपर तुम ध्यान मत दो। तुमसे जहाँ तक बने, तुम अपनी तथा अपने बाल-बच्चोंकी भलाईकी गरज़से गउओंकी तन, मन और धनसे खूब सेवा करो। उनके दूध और घीसे हृष्ट-पुष्ट बनो, और धन कमाओ। उनके बच्चोंसे खेती करके अन्न पैदा करो और उनके गोबर तथा मूतकी खाद देकर अपने खेतोंको सदा अधिक उपज देनेवाला बनाए रक्खो।

गऊ-बैलके गोबर और मूतकी खाद कई प्रकारसे बनाई और खेतोंमें डाली जाती है। दो-एक प्रकारोंकी चर्चा यहाँ की जाती है—

(१) तीन फुट गहरे और आवश्यकताके अनुसार लंबे-चौड़े तीन छाँहदार गढ़े बनाने चाहिए। एक गढ़ेमें जवान और तंदुरुस्त गऊ-बैलोंके गोबर और मूतसे भरा गोंजन प्रतिदिन डालते रहना चाहिए। दूसरे गढ़ेमें बूढ़ और बीमार पशुओंके गोबर और मूतसे भरा गोंजन डालते जाना

चाहिए। तीसरे गड्ढेमें बच्चोंका गोबर डालते जाना चाहिए। ये गड्ढे जब भर जायँ, तब उनको मिट्टीसे तोप देना चाहिए। दस महीनेमें वह खाद पक जायगी। तब उसे निकाल और बारीक करके खेतमें डाल देना चाहिए। खादको खेतमें ढेरके रूपमें न पड़े रहने देना चाहिए। उसे खेतमें डाल-कर हल चला देना चाहिए जिससे वह खेतके नीचे, उसके पेटमें, पहुँच जाय। कुछ लोग खादके ढेरको खेतमें कई दिनों तक डाल रक्खा करते हैं। ऐसा करनेसे धूपके मारे खादकी उपजाऊ शक्तिके तत्त्व उड़ जाते हैं। ध्यान रहे, गो-वंशके गोबरके साथ घोड़े-घोड़ीकी लीद न मिलने पावे। लीदकी तासीर गरम होती है। उसकी खाद अलग गड्ढेमें रक्खी जाय। वह पंद्रह महीनोंमें पकती है। जब पक जाय, तब वह भी खेतोंमें डाली जाय। उससे भी लाभ होता है।

गऊ और बैलोंके लिये प्रतिदिन गोंजनका बिछौना कर दिया जाना चाहिए। ऐसा करनेसे पशुओंको आराम मिलता और उनका मूत उस गोंजनके साथ सुगमतासे खाद बनाया जा सकता है।

(२) दूसरी रीति यह है कि रोजका गोबर और मूतसे भरा गोंजन खेतमें फुट-डेढ़ फुट गहरी नाली खोदकर गाड़ दिया जाया करे। ढोरोंको खेतोंमें रखनेका सुबीता हो तो ऐसा करना सहज है।

(३) खेतोंकी मिट्टी खोदकर और उसे महीन करके पशुओंकी रहनेकी जगहमें बिछा देना चाहिए। जब वह उनके मूतसे भीग जाय, तब उसे खेतोंमे खादकी तरह डाल देना चाहिए। फिर उसी जगह पर दूसरी मिट्टी लाकर डाल देना उचित है। ऐसा करते रहनेसे गो-वंशके मूतकी खाद खेतोंमें पहुँचती और उससे खेतोंकी उपजाऊ शक्ति की रक्षा और वृद्धि होती रहेगी।

प्यारे किसान भाइयो, तुम मेरी इन बातोंको सुनकर कहोगे कि गोबरकी खाद बनाई जायगी, तो जलानेके लिये कंडे हम कहाँसे पावेंगे? मगर जो थोड़ा-सा विचार करोगे, तो इसका उत्तर तुमको मिल जायगा। वह यह है कि गोबरकी खाद खेतोंमें डालनेसे तुम्हारी उपज इतनी बढ़ जायगी कि उसकी आमदनीसे तुम जलानेके लिये लकड़ी बहुत आसानीसे खरीद सकोगे। उस लकड़ीकी राखको गोबरकी खादके साथ मिलाकर खेतोंमें डालोगे, तो तुम्हारे खेतोंकी उपजको उससे और भी अधिक लाभ होगा। गोबरके कंडे बनाकर तुम जला देते हो। उससे यदि तुम साल-भरमें दस रुपएकी बचत करते हो, तो गोबरकी खाद खेतोंमें डालनेसे तुमको एक सौ रुपएकी उपज अधिक मिलेगी। दोनों बातें मैंने तुम्हारे सामने रख दी हैं। जो तुमको अधिक लाभ देनेवाली जान पड़े, उससे काम लो, और खासा लाभ उठाओ।

यहाँ तक मैंने जो बातें कही हैं, उनसे तुमको मालूम हो गया होगा कि गो-वंशका किसानीसे कितना घना संबंध है। किसान भाइयो, इसके साथ ही तुमको यह भी मालूम हो गया होगा कि तुम अपनी नादानीके कारण गउओंकी ओर ध्यान न देकर अपनी कितनी हानि करते हो। मुझे आशा है कि आजसे तुम लोग गउओंकी खासी सेवा करके उनके दूध, मक्खन और गोबर-मूत्रसे खूब लाभ उठाओगे।

गांवमें बसनेवाले मनुष्यके पास अगर खेत न हो, केवल एक गऊ ही हो, तो वह उसके गोबर और मूत्रका खाद अपने घरके पीछेके बाड़ेमें डालकर उसमें तमाकू और मकाई-जुआर आदिकी अच्छी फसल पैदा कर उससे फ़ायदा उठा सकता है।

किसानोंको अपना इतना बड़ा उपकार करनेवाले गो-वंशकी सदा रक्षा करते रहना चाहिए। दस-बीस रुपएके लोभमें पड़कर जो किसान अपनी गऊ या बैलको बेकाम समझते और बेच डालते हैं, वे अपनी बड़ी भारी हानि करते हैं। सारांश यह कि किसानोंको कभी किसी हालतमें भी गो-वंशको अलग नहीं करना चाहिए। गो-वंश अंधा, लंगड़ा, लूला और बूढ़ा हो जाने पर भी अपने गोबर और मूत्रसे किसानोंका उपकार करता और उनके खेतोंकी उपजको बढ़ाता रहता है। गो-वंशके मर जानेपर उसका चमड़ा किसानोंका जो काम करता है,

वह तो तुमको मालूम ही है। उसकी हड्डी तक खेतकी उपज बढ़ानेके काममें आती है। हड्डियोंको चमारोंसे पिसवाकर खेतोंमें डालनेसे वे खेतकी उपजको बढ़ाती हैं। किसान भाइयो, आजकल तुम्हारी लापरवाहीसे, तुम्हारे गो-वंशकी हड्डियाँ सात समुद्र और तेरह नदियोंके पार जाकर योरप और अमेरिकाके किसानोंके खेतोंकी खाद बनती हैं। वे इतना ख़र्च उठाकर भी उन्हें ख़रीदते हैं। तुम थोड़ी-सी सावधानीसे काम करना सीखो, तो तुमको तुम्हारे गो-वंशकी हड्डियोंकी खाद मुफ़्तमें मिल सकती है।

प्यारे किसान भाइयो, इस लेखके साथ चार गउओंके चित्र तुम लोगों को भेंट किए जाते हैं। ये जीती-जागती गउओंके चित्र हैं, चितेरेकी चातुरी नहीं। इन गउओं-के अंग-प्रत्यंगको ख़ूब ध्यान देकर देखो। ज्यों-ज्यों उनकी बनन और गढ़नका चित्र तुम्हारे चित्तपर उभरता जायगा, त्यों-त्यों तुम्हारा चित्त वैसी गउओंके मालिक बननेके लिये ललचाने लगेगा। इन चित्रोंको देखकर निराश होनेकी आवश्यकता नहीं है। इन चित्रोंको देखकर आजसे ही तुम अपने मनमें अगर यह ठान लो कि ऐसी गउएँ हमको भी मिलनी ही चाहिए, तो विश्वास रक्खो, हमारी बताई हुई गो-पालनकी विधिको अपनानेसे तुम लोग निस्संदेह ऐसी एक नहीं, अनेक गउओंके मालिक बन जाओगे। साथ ही उनके

दूध, दही, और मक्खनसे अपनेको तथा अपने देशको भी सुखी और मालामाल बना दोगे। सुखी और मालामाल बननेके उपाय तुम्हारे सामने है। तुम उनको काममें लाओ, और सुखी बनो। ईश्वर तुमको सुखी बननेकी सुबुद्धि दे, यही उससे मेरी आंतरिक प्रार्थना है।
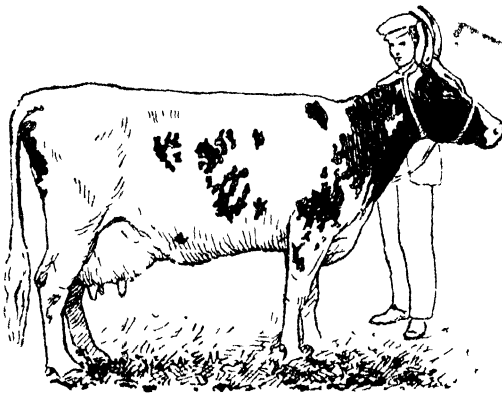
ऐर-शायरकी लाल सफ़ेद रंगकी गऊ

प्यारे किसान भाइयो, जब तक तुम लोग अपने खेतोंकी जुताईकी ओर पूरा-पूरा ध्यान नहीं दोगे, तब तक तुम्हारी खेतीकी उपज नहीं बढ़ेगी। खेतोंकी जुताई और फ़सलकी उपजसे बहुत गहरा संबंध है। जुताईके विषयमें दो क़िस्से बहुत प्रसिद्ध हैं। उनको मैं यहाँ सुनाता हूँ। ध्यान देकर सुनो।

एक किसान मरते समय अपने लड़कोंसे कह गया कि

असल गर्नसी-नसलकी गऊ

असल हालस्टीन-नसलकी गाऊ

मेरी कमाईका धन मँझखित्ता नामके खेतमें गड़ा हुआ है। जब तुमको धनकी जरूरत हो तब उसे वहाँसे खोद लेना। लड़कोंने अपने बापका क्रिया-कर्म करके सबसे पहले उस खेतको, धन पानेकी लालसासे, पूरा-पूरा खोद डाला। पर उसमें उनको धनके नाम एक कौड़ी भी नहीं मिली। निराश होकर वे आपसमें कहने लगे कि बूढ़ेने मरते समय धनका लोभ यों ही दिया था।

उस साल उस खेतमें उन लोगोंने गेहूँ बोया। उसकी उपज इतनी अधिक हुई कि उसे बेचकर वे लोग मालामाल हो गए। तब बड़े लड़केके ध्यानमें यह बात आई कि बापने जो कहा था कि खेतमें धन गड़ा है, वह अक्षर-अक्षर सच है। हम लोग खेतको इस तरह अगर न खोदते, तो उसमें इतनी उपज कभी न होती।

दूसरी कहानी इस प्रकार है कि एक बहू सिवइयाँ बटते-बटते कुछ कामके लिये घरमें चली गई। उस समय एक कौआ उसकी थालीमें रक्खी हुई मैदेकी लोईसे कुछ मैदा नोचकर ले भागा। लौटकर उसने कौएसे कहा कि यह मैदा मेरे बापके घरके गेहूँकी होती, और तू इस प्रकार उसकी लोई ले जाता, तो तुझे उसका मजा मालूम होता। उसकी सासने इस बातको सुनकर उससे पूछा—बहू, तेरे बापके यहाँके गेहूँ कैसे होते हैं? उत्तरमें बहूने बड़ी नम्रताके साथ कहा—सासजी, मेरे

आपके यहाँके गेहूँमें लस बहुत होती है। कौआ उसकी मैदामें चोंच मारकर भाग नहीं सकता। वह उसमें फँस जाता है। और भी पूछनेपर बहूने कहा कि खेतकी खूब जुताई करनेसे गेहूँमें लस पैदा होती है।

दूसरे साल जब उसके ससुरने खेत जोतकर तैयार किया, तब बहूको बुलाकर खेत दिखाया। बहूने कहा कि खेतके ऊपरकी मिट्टी इतनी महीन और गहरी हो जानी चाहिए कि उसमें पानीसे भरा हुआ घड़ा रक्खा जानेपर उसमें घुस जाय। तब समझना चाहिए कि खेतकी जुताई ठीक हुई है। ससुरने बहूके कहनेके अनुसार फिर जुताई की। बहू पानीसे भरा हुआ घड़ा लेकर खेतमें गई। ज्यों ही उसने घड़ेको खेतमें रक्खा, त्यों ही वह खेतकी मिट्टीमें घुस गया। बहूने कहा—ससुरजी अब खेतकी जुताई ठीक हो गई। तब उसमें गेहूं बोए गए। उन गेहुओंकी मैदा बनाई गई, और कौएको उसकी लोईमें चोंच मारनेका अवसर दिया गया। ज्यों ही उसने उसमें चोंच मारी, त्यों ही उसकी चोंच उसमें फँस गई, और वह फड़फड़ाने लगा। इस दृश्यको देख उस बहूके सास-ससुर और गांवके लोग बहुत प्रसन्न हुए, और तबसे वे खेतकी जुताईकी ओर अधिक ध्यान देने लगे।

प्यारे किसान भाइयो, आजकल तुम लोग अपने खेतोंकी जो जुताई करते हो, वह ठीक नहीं है। खेतोंकी फसलको काटनेके बाद ही उनमें हल चला देना चाहिए। हलके चलाने-

से काटी हुई फसलकी जड़ ऊपर आ जाती हैं, नीचेकी मिट्टी ऊपर और ऊपरकी नीचे हो जाती है। इस प्रकार नीचेकी मिट्टीके कणोंमें हवा, प्रकाश और तापका प्रवेश हो जाता है। वर्षाका पानी बरसने तक पंद्रह-बीस दिनके अंतरमें इस प्रकारकी जुताई करते रहनेपर खासी जुताई हो जाती है।

इस प्रकार जोते हुए खेतोंपर जब वर्षाका जल बरसता है, तब वह खेतोंके पेटमें जाकर वहाँपर जमा हुई खादको पौधोंके भोजनके लिये द्रवरूपमें तैयार करने लगता है। खेतमें बीज बोनेका समय आने तक इस प्रकार खेतोंके पेटमें पौधोंका भोजन तैयार हो जाता है। अभी तुम जो थोड़ी-सी यों ही हलकी जुताई करते हो, उससे खेतोंके ऊपर और नीचेकी धरती ठीक-ठीक पोली और महीन नहीं होने पाती। नतीजा यह होता है कि वर्षाका जल जितना खेतके गर्भमें जाना चाहिए, उतना वह वहाँ नहीं जाता, वह इधर-उधर यों ही बह जाता है। इसलिये जो उपजको बढ़ाना हो, तो खेतोंकी खूब जुताई करनी चाहिए। खासी जुताई तभी की जा सकेगी, जब तुम बैलोंको अपने घरमें पैदा करोगे। मोलके बैलोंसे यह काम पूरा नहीं हो सकता, क्योंकि वे बहुत महँगे पड़ते हैं।

खेतको खासी बढ़िया खाद देकर उसकी उत्तम जुताई कर लेनेके बाद उसमें जब चुना हुआ एक जातिका सुंदर और

रोगरहित बीज बोया जाता है, तब वह भली भाँति उगता है। खेतोंके नीचे तैयार किए हुए अपने भोजनोंको जड़ों द्वारा चूसकर पौधे बढ़ते हैं, और तब वे खूब उपज देते हैं।

प्यारे किसान भाइयो, आजकल तुम लोग ऐसा सड़ा-गला कचरे-कूड़ेसे भरा हुआ, कई जातिके बीजोंसे मिला हुआ, बीज बोते हो कि वह जितना बोया जाता है, उतना उगता ही नहीं। जो बलवान् बीज होता है, वही उगता है। वही खेतोंके भीतर पैदा किए हुए अपने आहारको खाकर बढ़ता और उपज देता है। इसलिये तुम लोगोंको चाहिए कि फ़सल आनेपर सबसे पहले एक जातिके बड़े-बड़े दाने चुनकर बीजके लिये रख लिया करो। कहने-सुननेमें यह बात जैसी सहज मालूम होती है, वैसी करनेमें सहज नहीं है, इस बातको मैं मानता हूँ। पर साथ ही तुम लोगोंको इस बातका विश्वास दिलाता हूँ कि तुम जो इस तरह उत्तम बीजका चुनना शुरू कर दोगे, तो उसको जमा कर लेना कुछ असंभव न होगा। अपनी आमदनी बढ़ाना चाहते हो, तो उसके लिये तुमको अच्छा बीज तैयार करनेके वास्ते कुछ अधिक परिश्रम करनेको तैयार हो जाना चाहिए।

आजकल खेतमें बीज बो देनेके बाद तुम खेतको बहुधा भगवान् और भाग्यके भरोसे छोड़कर दूसरे-दूसरे काम-काज करने लगते हो। यह बहुत बुरा है। ऐसा करनेसे फ़सलकी

पूरी-पूरी रक्षा नहीं होती। खेतमें बोई हुई फ़सलसे जो तुम पूरी-पूरी उपज लेना चाहते हो, तो तुमको चाहिए कि उसकी उचित देख-भाल और रक्षा किया करो। वह इस प्रकार कि खेतोंमें फ़सलके उगते ही देखो कि उसके किस हिस्सेमें फ़सल अच्छी उगी है, किसमें कम उगी है, और किसमें उगी ही नहीं। उन हिस्सोंको देखकर वहाँपर निशान लगा दो। उसके बढ़ने और पकनेके बाद तुम ध्यानसे देखोगे, तो तुमको मालूम होगा कि कहीं पौधे बढ़े तो खूब हैं, पर उनमें दाने कम हैं; और कहीं पौधे बढ़े ही नहीं है, इत्यादि। ऐसे स्थानोंपर भी चिह्न लगा दो।

फ़सलको काटनेके बाद खेतमें हल चला दो। जहाँ फ़सल बिलकुल उगी ही नहीं थी, वहाँ हर तरहके पेड़ोंकी पत्तियाँ सड़ाकर उनकी बनी हुई खाद डालो; जहाँ फ़सल कम उगी हो, वहाँपर गो-वंशके गोबरकी पकी हुई खाद डालो : जहाँ-पर फ़सल खूब बढ़ी हो, पर उसमे दाने कम लगे हों वहाँ-पर हड्डियों को पीसकर उसकी बनाई हुई खाद डलवा दो। इस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थानोंपर, उनकी आवश्यकताके अनुसार, खाद देनेसे तुमको दूसरे वर्ष खासी उपज मिलेगी।

किसान भाइयो, तुमको अपनी खड़ी फ़सलके खेतोंमे प्रति-दिन घूम-फिरकर यह देखते रहना चाहिए कि किस खेतके किस हिस्सेमें फ़सल नीरोग है, और किस हिस्सेमें रोग लग रहा

है। ज्यों ही तुमको फ़सलके एक पौधेमें भी किसी प्रकारका रोग देख पड़े, त्यों ही तुम उस पौधेको उखाड़कर अपने गाँवके पटवारीके पास ले जाओ, और उससे कहो कि वह उस पौधेको तुम्हारे जिलेके किसानी-विभागके अफ़सरके पास अपनी रिपोर्टके साथ भेज दे। तुम पटवारीसे ऐसी रिपोर्ट करनेके लिये कहनेसे कभी मत चूको। सरकारने पटवारीको इसीलिये रक्खा है कि वह तुम्हारी फ़सलकी हालतकी रिपोर्ट सरकारके पास भेजा करे। पटवारी तुम्हारी रिपोर्टको न भेजे, तो तुम और किसी लिखे-पढ़े आदमीसे उसे लिखाकर भेज दो। तुम अगर खुद लिख सकते हो, तो तुम्हीं उसे लिखकर भेज दो। तुम्हारी रिपोर्टको पाते ही किसानी-विभागके अफ़सर तुम्हारे गाँवमें आवेंगे। उनके आनेपर तुम उनको अपने खेतका वह हिस्सा दिखाओ, जिसमें वह रोग लगा हो। वे जो-जो बातें पूछें, उन्हें उनको बता दो। वे उस रोगका पता लगाकर तुमको उसका कारण समझा देंगे। उस कारणको जान लेनेके बाद जो तुम उससे बचनेकी सावधानी करोगे, तो फिर वैसा रोग तुम्हारी फ़सलमें नहीं लगने पावेगा।

तुम्हारे खेतोंमें जो दरारें फटती हैं, वे भी खड़ी फ़सलको बहुत नुक़सान पहुँचाती हैं। तुमसे बन सके, तो उन दरारोंको भरनेका यत्न करते रहो।

अमेरिकाके कारीगरोंने एक ऐसा हल बनाया है, जो खड़ी

फ़सलके खेतोंकी दरारोंको बंद कर देता है। उस हलका जबसे उस देशमें प्रचार किया गया है, तबसे वहाँकी फ़सलकी उपज बहुत बढ़ गई है। हिंदुस्तानके कारीगर जब तक वैसा हल नहीं बनाते या जब तक तुम्हारे पास अमेरिकाके उस "कल्टी-

कल्टी-पैकर
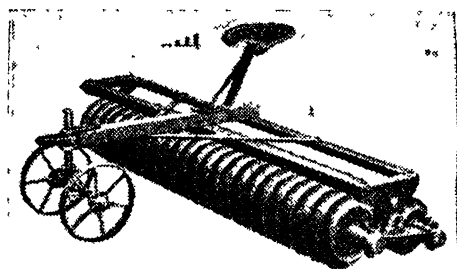
पैकर"-नामक हलको ख़रीदने लायक़ धन नहीं होता, तब तक तुमको अपने खेतकी दरारोंको भरनेका प्रयत्न हाथोंसे ही करना चाहिए। हाथोंसे यह काम पूरा नहीं हो सकेगा। पर जो बिलकुल उसकी परवाह न करोगे, तो ज़्यादह नुक़सान होगा। कुछ परवाह करोगे, तो थोड़ा लाभ अवश्य ही होगा।

अमेरिकाके किसान खड़ी फ़सलको भी खाद देते हैं, और उससे फ़सलको बहुत लाभ होता है। तुम लोग किसानीकी पुस्तकें और अख़बार पढ़ना शुरू कर दो अथवा किसानीके अफ़सरोंसे बार-बार मिलकर उनसे किसानीकी बातें पूछा करो, तो तुमको तुम्हारी किसानीकी उपज बढ़ानेवाली कई बातें

मालूम हो सकती हैं। किसान भाइयो, तुम यह मत समझो कि जिस ढंगसे आज दिन किसानी करते हो, वही ढंग सबसे बढ़िया है। योरप और अमेरिकाके किसानोंको वहाँके विद्वानों-ने किसानीको सुधारनेके ऐसे-ऐसे बढ़िया ढंग बताए हैं कि उनसे वे लोग बहुत फ़ायदा उठा रहे हैं। दुःखकी बात है कि तुम्हारे ज़मींदारोंका ध्यान किसानीको सुधारनेकी ओर नहीं जाता। जब तक उनका ध्यान नहीं जाता, तब तक तुम ही जितना तुमसे बनता है, उतना करो। भगवान् तुमको तुम्हारी मेहनतका फल ज़रूर ही देंगे।

प्यारे किसान भाइयो, तुम लोग फ़सलको काटने, मींजने और उड़ानेमें जो असावधानी, उपेक्षा या लापरवाही करते हो, उससे माल बहुत घटिया बनता है। उसमें मिट्टी और कचरा बहुत रह जाता है। ऐसा माल जब बाज़ारमें जाता है, तब उसकी पूरी-पूरी क़ीमत नहीं मिलती। तुमसे सस्ते दामोंमें ख़रीदकर नगरके रोज़गारी लोग उसे साफ़ करते हैं। फिर उसे महँगे दामोंपर बेचकर ख़ासा मुनाफ़ा उठाते हैं। तुम लोग अपने मालको जो साफ़-सुथरा बनाया करो, तो वही लाभ, जो बनिए मार खाते हैं, तुमको मिला करे। आशा है, तुम लोग मुझसे इस बातको सुनकर अब माल तैयार करनेमें लापरवाही नहीं किया करोगे। जितना माल तैयार करो, वह बहुत अच्छा और साफ़ हो। उससे तुमको ख़ासा लाभ होगा। जैसे, गेहूँके

साथ चना मिलाकर बोते हो, और छानते समय इतनी असा-वधानी करते हो कि गेहुँओंमें चने रह जाते हैं । अबसे उन्हें ऐसा छाना करो कि गेहुँओंमें एक दाना भी चनेका न रहने पावे । गेहुंओंको ऐसा छानो कि उसमें बड़े-बड़े दानोंके गेहूँ अलग हो जायँ, और छोटे-छोटे दानोंके अलग । अच्छा माल देखकर खरीदनेवाले तुमको उसकी अच्छी क़ीमत देंगे । इस प्रकार तुमको अधिक लाभ होगा ।

फ़सल तैयार कर लेनेपर पहले उतनी ही बेचो जितनी लगान देनेको बेचनी चाहिए । बाक़ी फ़सलको बावन हिस्सोंमें बाँटकर हर बाज़ारको एक हिस्सा बेचते रहोगे, तो तुम्हारा माल सब तरहके भावोंसे बिकेगा, और तुमको उससे अच्छा लाभ होगा । और, सब माल जो एकदम बेच दोगे, तो बाज़ार-भाव सस्ता होनेके कारण तुमको हानि होगी । बाज़ार-भाव तेज़ बहुत कम रहता है । तेज़ीके लोभसे सब माल मत बेच डालो । भाव कितना ही तेज़ क्यों न हो, बीजको कभी मत बेचो । बीजको भावके लोभसे बेच डालोगे, तो बोनीके समय तुमको बहुत महँगा बीज ख़रीदना पड़ेगा, और बीज अच्छा भी नहीं मिलेगा ।

एक खेतमें हर साल एक ही फ़सल बोते रहनेसे उस खेतकी उपजाऊ शक्ति घट जाती है । इसलिये हर साल अदल-बदलकर फ़सल बोते रहना चाहिए । अनुभवसे मालूम हुआ

है कि एक खेतमें लगातार बीस वर्ष तक गेहूँ या अलसी बोते रहनेसे, उस खेतकी उपजाऊ शक्ति बिलकुल मारी जाती है। इसलिये गेहूँके बाद चना और चनेके बाद अलसी, इस प्रकार अदल-बदलकर फ़सल बोते रहना चाहिए। किसानी-महकमा इस विषयमें हर साल नई-नई बातें खोजता रहता है। तुम अगर किसानी-महकमेके अफ़सरोंसे इस विषयकी पूछताछ करते या किसानीके अख़बार और पुस्तकें पढ़ते-सुनते रहोगे, तो तुमको इस विषयकी बहुत-सी लाभदायक बातें मालूम होती रहेंगी।

चिलम पीनेमें, यों ही गप्पें मारनेमें या झूठे मुक़द्मे चलानेका रोज़गार करनेवालोंके फंदेमें फँसकर जो तुम अपना समय नष्ट करते हो, तो उसे अब बंद कर दो। पापियोंके साथ रहकर तुमको थोड़े-से दस-पाँच रुपयोंके लोभमें पड़कर झूठी गवाही देनेका पाप ही मिलेगा। जब झूठी गवाही देने जाओगे, तब तुम्हारे खेतकी फ़सल ख़राब होगी। इसलिये उन दुष्टोंका साथ छोड़ दो। रात-दिन किसानीकी उपज बढ़ानेवाली नई-नई युक्तियोंकी खोजमें लगे रहा करो। ऐसा करते रहनेसे तुमको नित-उठ किसानीकी नई-नई युक्तियाँ मालूम होती जायँगी, और उनसे तुम्हारी खेतीकी उपज दिन-दिन बढ़ती जायगी। मतलब यह कि रात-दिन आगे लिखी हुई चौपाईका पाठ किया करो—

खोजि उपाय करहु सो भाई,
कामधेनु हो भूमि सुहाई।

अब समय आ गया है कि तुम अपनी-अपनी खेतीकी धरतीके गुण-धर्म समझनेका यत्न करो। यह बात तो तुम जानते ही हो कि तुम्हारे किसी खेतकी धरतीका नाम काबर है, तो किसीका मुंड, किसीका रैंया, किसीका रठिया, किसीका भाटा, किसीका दोमट्टा, किसीका सेहरा, किसीका मटासी इत्यादि-इत्यादि। तुमको अनुभवसे यह बात मालूम हो चुकी होगी कि चनेकी उपज जितनी अच्छी काबरमें होती है, उतनी अच्छी गेहूँकी नहीं होती। तुम अपने इतने ज्ञानको ही काफ़ी मत समझ लो। इतने ज्ञानसे तुम्हारी किसानीकी उपज नहीं बढ़ेगी। किसानीकी उपज बढ़ानेके लिये तुमको अपना किसानीका ज्ञान और भी बढ़ाना होगा। तुम्हारा किसानी-विषयक ज्ञान किसानी-महकमेके बाबू लोगोंसे मिलते-जुलते रहनेसे बढ़ सकता है। बाबू लोगोंसे तो भेंट कभी-कभी हो सकती है, पर किसानीके पत्र और पुस्तक तुमको सदा सहायता देनेको तैयार हैं। श्रीयुत बाबू दुलारेलालजी भार्गव, संचालक गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊके पास दो पैसे खर्च करके एक कार्ड भेज दो, और उसमें उनको लिख दो कि आपके पास किसानीकी जो पुस्तकें हैं, उनमें-
इतनी क़ीमतकी पुस्तकें हमारे नामसे भेज दीजिए। हम

उनकी क़ीमत चिट्ठीरसाको देकर उन्हें ले लेंगे। तुम्हारे उस कार्डके लखनऊ पहुँचते ही वहाँसे किताबें रवाना कर दी जायँगी। आठ-दस दिनके भीतर चिट्ठीरसा उनको लेकर तुम्हारे पास पहुँचेगा। चिट्ठीरसाको उनके दाम (रुपया, डेढ़ रुपया, जो कुछ हो) देकर उन्हें उससे ले लो। अगर ख़ुद पढ़ सकते हो, तो उन्हें धीरे-धीरे पढ़ो, और समझो। उनके पढ़नेसे तुमको खादकी, धरतीके गुण-धर्मकी बहुत-सी नई-नई बातें मालूम हो जायँगी। अगर तुम आप नहीं पढ़ सकते, तो अपने गाँवके पटवारी या मदरसेके मास्टरसे उन्हें पढ़वाकर सुनो। किसानी-की पुस्तकें सुननेसे तुमको लाभ ही होगा। इस प्रकार तुम जब पहले मँगाई हुई पुस्तकोंको पढ़-सुन और समझ चुको, तब फिर उनको और दूसरी किसानीकी पुस्तकें भेजनेके लिये लिख दो। इस सिलसिलेको सदा जारी रक्खो। इस प्रकार पुस्तकोंको ख़रीदनेमें जो दो-चार या दस-पाँच रुपए ख़र्च करोगे, उनसे तुमको किसानीका वह ज्ञान मिलेगा, जो तुम्हारे खेतोंकी धरतीको कामधेनु अर्थात् अधिक-से-अधिक उपज देनेवाली बना देगा। नीचे लिखी हुई पंक्तियोंको तुम आप याद कर लो, और अपने बाल-बच्चोंको भी याद करा दो, और उनका मतलब भी उन्हें समझा दो—

"कृषि-विज्ञान भूमिको करता
कामधेनु, यह ध्यान धरो।"

इन पंक्तियोंका यह मतलब है— इस बातको तुम अपने ध्यानमें धारण कर रक्खो कि किसानीका विज्ञान-मूलक ज्ञान धरतीको कामधेनु अर्थात् अधिक-से-अधिक उपज देनेवाली बनाता है। इसलिये प्रत्येक किसानको चाहिए कि वह नित-उठ अपने किसानी-विषयक ज्ञानको बढ़ाता रहे। वह यह समझकर संतोष न कर ले कि जो कुछ मैं जानता हूँ, उससे अधिक संसारमें कोई नहीं जानता। योरप और अमेरिकाके किसान नित-उठ नई-नई बातें खोजते रहते हैं। इसका फल यह हुआ है कि अब उनको धरतीके गुण-धर्मकी ऐसी बहुत-सी बाते मालूम हो गई है, जिनके कारण वे अपने खेतोंसे थोड़े-से खर्चमें बहुत क़ीमतकी बहुत-सी फ़सल पैदा कर लेते हैं। तुम अपने किसानी-विषयक ज्ञानको बढ़ाओगे, तो ईश्वर तुमपर भी कृपा करेंगे—तुम भी अधिक उपज पाने लगोगे, और उसे बेचकर सुखी और मालामाल बन सकोगे।

अपने खेतोंकी धरतीके गुण-धर्मके विषयमें तुम नीचे लिखी हुई मोटी-मोटी बातें याद कर लो, तो अभी तुमको लाभका अनुभव होने लगेगा—

(१) रेतीली धरतीको पत्तियोंको सड़ाकर बनाई हुई खाद और पानी जब पूरा-पूरा दिया जाता है, तब उसमें तरकारी-भाजी, गन्ना और बागकी फ़सलें खूब पैदा हो सकती हैं।

(२) जिस धरतीमें काली चिकनी मिट्टीका महीन अंश अधिक रहता है, उसमें गेहूँकी उपज अच्छी होती है ।

(३) जिस धरतीमें मोटे कणवाली काली मिट्टी अधिक होती है, उसमें घासकी जातिकी फ़सलें अधिक उपज देती हैं।

(४) आलू, शकरकंद मूँगफली आदि धरतीके भीतर फलनेवाली फ़सलें उस ज़मीनको चाहती हैं, जिसमें रेतीका अंश न अधिक होता है, और न कम; औसत दर्जेका होता है। उसी तरह महीन और मोटी काली मिट्टी भी मध्यम प्रमाणपर होती है ।

(५) आम, बिही, संतरे आदिके पेड़ उस धरतीमें अधिक उपज देते हैं, जिसमें काली मिट्टीका अंश अधिक होता है ।

(६) जिस धरतीमें रेत और काली मिट्टीके भाग समान होते हैं, उसमें मकई, जुआर आदिकी उपज ख़ासी होती है ।

(७) जिस धरतीमें महीन काली मिट्टीका अंश अधिक होता है, उसमें अलसी, तिल्ली, रमतिल्ली आदिकी उपज अच्छी होती है ।

धरती किसी प्रकारकी हो, उससे अधिक उपज लेनेके लिये किसानको नीचे लिखी हुई बातोंकी ओर सदा ध्यान देते रहना चाहिए—

(क) अच्छी जुताई ।

(ख) पत्तियोंको सड़ाकर बनाई हुई भरपूर खाद ।

(ग) खेतके पेटमें काफ़ी हवा, प्रकाश और गरमी पहुँचाना ।

(घ) खेतके भीतर पानी बनाए रखना ।

(ङ) खेतके पेटमें फ़सलोंके भोजनोंको पूर्ण मात्रामें बनाए रखना ।

किसान भाइयो, तुम ऊपर लिखी हुई पाँच बातोंका पूरा-पूरा ज्ञान जब प्राप्त कर लोगे, तब तुम भी फिर अपने खेतोंसे अधिक-से-अधिक उपज पाने लगोगे ।

हमारी इन बातोंको झूठ क़िस्से-कहानीके समान समझकर छोड़ मत दो। यह समझकर भी मन छोड़ दो कि इतनी मेहनत किससे हो सकती है । फल मेहनत करनेसे ही मिलता है । जो जितने अधिक ज्ञानके साथ मेहनत करता है, उसे उतना ही अधिक फल मिलता है । अभी तुम्हारे घरमें गऊके गोबर और मूतकी जो खाद तैयार की जा सकती है, उसे तुम थोड़ा-सा अधिक ज्ञान प्राप्त करके, थोड़े-से अधिक परिश्रम और खर्चके साथ, बनाना अगर सीख लोगे, और उसे काममें लाने लगोगे; तो तुम्हारे खेतोंमें गेहूँ, अलसी, कपास आदिकी जो आज दिन पाँच-छ:गुनी या इससे भी कम उपज होती है, वह फिर आठ-दसगुनी होने लगेगी । इस प्रकार जब तुम्हारे खेतोंकी उपज धीरे-धीरे बढ़ने लगेगी, तब तुम भी, अमेरिकाके

किसानोंकी तरह, थोड़े समयमें बहुत काम करनेवाले किसानोंके क़ीमती औज़ार ख़रीदनेको समर्थ हो सकोगे। अभी न तो तुम्हारे पास उनको ख़रीदनेके लिये काफ़ी धन ही है, और न उनको चलाना सीखनेके लिये काफ़ी ज्ञान ही। हमारे
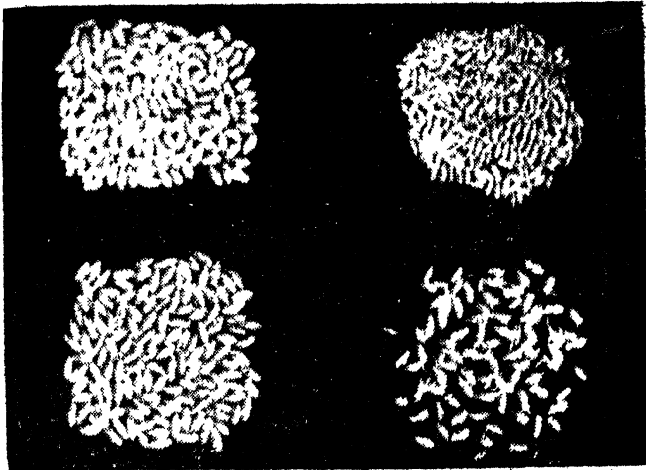
गाहनीकी कलसे साफ़ किया हुआ ग़ल्ला

कटनीकी कल
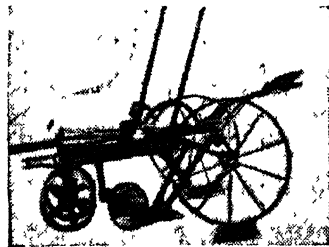
पक जानेपर चुक़ंदर इस औज़ारके द्वारा खेतसे खोदकर निकाला जाता है

बगीचेकी जमीन जोतनेका हल

यह हल पहाड़ी धरती जोतनेके काम आता है

कपासके खेत जोतनेका हल
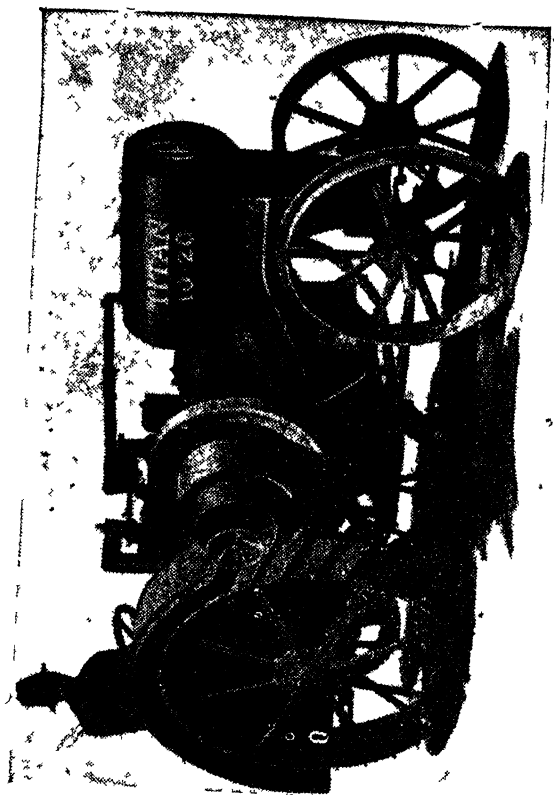
ट्रैक्टर

इससे खेतोंके सब औज़ार चलाए जाते हैं। इससे फ़सल बाज़ार और किसानके घर पहुँचाई भी जाती है

इससे चुक़ंदरका बीज खेतमें बोया जाता है

इस कलसे चुकन्दर बोनेके लिये खेत तैयार किया जाता है
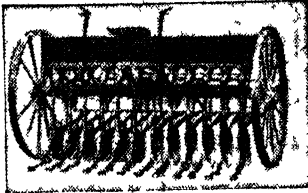
यह चित्र नाड़ीका है। इस कल-से खेतमें बीज बोया जाता है। बत्तीस कतारें एकसाथ बोनेवाली नाड़ी तैयार हो चुकी है
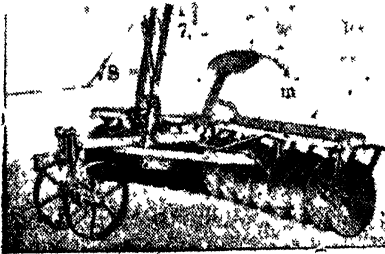
इस औज़ारसे जोते हुए खेतोंके ढेले फोड़कर महीन किए जाते हैं
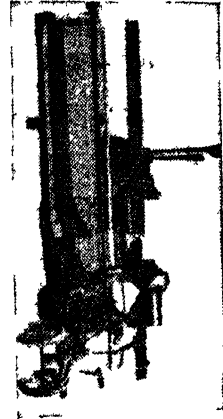
गाहनेकी कल
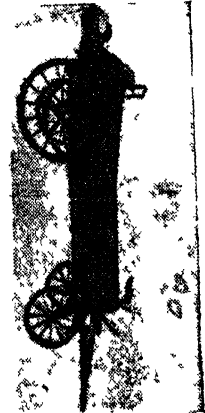
यह वह औज़ार है जिसमें खाद भरकर खेतमें फैलाई जाती है

इस कथनसे तुम लोग निराश मत होओ। हमारे कहनेका मतलब इतना ही है कि ईश्वरकी कृपासे आज दिन जो गो-धन तुम्हारे घरमें मौजूद है, उसीकी उचित सेवा करना सीखो; उसीसे अच्छे-अच्छे बैल पैदा करना सीखो; उसीके गोबर और मूतसे अच्छी जोरदार खाद बनाना सीखो; उस खादको उचित रीतिसे खेतोंमें डालना सीखो: अपने खेतोंमें सींचनेके लिये कुएँ खुदवानेका प्रबंध करो। अगर इन सब कामोंको ठीक-ठीक रीतिसे करना सीख लोगे, और उसके अनुसार काम करने लगोगे, तो तुम्हारे खेतोंमें खूब उपज होने लगेगी।

हम बहुत गरीब हैं, हमारे पास बीज नहीं हैं, बैल नहीं हैं ढोरोंके चरानेको चारा नहीं है सरकारने सरकारी जंगल रोक दिए हैं, चरूका निर्ख बढ़ा दिया है, हम अगर बाँध, बँधिया या कुआँ खुदवाकर खेतोंकी तरक्की करते ह, तो सरकार हमारे खेतोंका लगान बढ़ाकर हमारी तरक्कीका लाभ हमसे छीन लेती है, यह सब कहना व्यर्थ है। सरकारने किसानोंको किसानीका ज्ञान सिखानेके लिये किसानी-विभाग खोल रक्खा है। उस विभागके पीछे प्रत्येक प्रांतकी सरकार प्रतिवर्ष लाखों रुपए खर्च करती है। तुम लोग उसके पास नहीं जाते, अपने ज्ञानको ही काफ़ी मान लेते हो, इसीसे तुमको उससे लाभ नहीं होता। तुम चाहते हो, तुम्हारा हरएक काम सरकार कर दिया करे, तुमको कुछ न करना

पड़े। ऐसा कैसे हो सकता है? तुम्हारे शरीरके प्रत्येक अंग-को—हाथोंको, पैरोंको, आँखोंको, मुँहको—जब अपने-अपने काम अलग-अलग करने पड़ते हैं एकके कामको दूसरा नहीं करता, तब यह कैसे संभव है कि अकेली सरकार ही तुम्हारे सब काम कर दे। उसने तुम्हारे कामोंमें सहायता पहुँचानेवाले विभाग खोल रक्खे हैं, अपने अज्ञानके कारण तुम उनसे काम नहीं लेते, तो उसमें तुम्हारा ही दोष है, उसका नहीं। हाँ, इतनी बात अवश्य है कि सरकार एक-एक मनुष्य-की माँगपर ध्यान नहीं देती। तुम अपनी सभा बनाकर उसके द्वारा सरकारके आगे जो माँग पेश करोगे, उसपर विचार करके वह अवश्य तुम्हें सहायता देगी।

अमेरिकामें एक साल थोड़ी वर्षा होनेके कारण गेहूँकी उपज बहुत कम हुई। वहाँके किसानोंका ध्यान इस बातकी ओर तुरंत गया कि क्या संसारमें ऐसी जातिका भी कोई गेहूँ है, जिसकी उपज कम वर्षाके सालमें भी खासी होती हो? बस, इस प्रश्नके उठते ही किसानोंकी सभाओंने पहले आपसमें इसकी चर्चा की, बादको यह बात सरकारके पास लिख भेजी, और सरकारसे इसकी खोज करानेका आग्रह किया। सरकारने खोज कराई। नतीजा यह हुआ कि रूसके मुल्कमें एक जातिके गेहूँका पता लग गया, जो कम वर्षामें भी खासी उपज देता है। सरकारने वहाँसे वह गेहूँ मँगाकर

अमेरिकाके किसानोंको दिया । उन लोगोंने उसको बोकर देखा, और अनुभव किया कि सचमुच थोड़ी वर्षाके सालमें भी उसकी उपज अच्छी होती है । आज दिन अमेरिकामें उस गेहूँकी खेती बहुत होती है ।

ऐसे ही एक किसान अपने खेतमें कपास बोता था । हर साल कपासके पौधे खूब बढ़ते थे; पर उनमें कपासके फल नहीं लगते थे । दो-तीन साल इस दशाको देखकर उस किसानने इस बातकी चर्चा अपने गाँवकी किसानी-सभामें की । उसके गाँवकी किसानी-सभाने उस बातकी रिपोर्ट सरकारके यहाँ भेजी । उस रिपोर्टको पाते ही सरकारने किसानी-विभागके एक अफ़सरको उसके खेतकी मिट्टीकी जाँच करनेको भेज दिया। उस अफ़सरने मौक़े पर आकर उस किसानके उस खेतकी धरतीकी जाँच करके उससे कहा—भाई, तुम्हारे इस खेतके पेटमें पौधे बढ़ानेवाले भोजन तो हैं, पर फ़सलको पैदा करनेवाले भोजन नहीं हैं । तुम अपने खेतको हड्डीके चूरेकी खाद दो, तो उसकी पूर्ति होकर तुम्हारे खेतमें कपासकी ख़ासी उपज होगी । उस किसानने उक्त किसानीके अफ़सरकी सलाह मानकर अपने उस खेतको हड्डीके पिसानकी खाद दी। उस साल उसके उसी खेतमें बोए हुए कपासमें इतनी उपज हुई कि उससे उसकी पिछले सालोंकी हानि पूरी हो गई ।

प्यारे किसान भाइयो, तुममें जो दो-चार आदमी लिखे-

पढ़े हैं, और जो अपनेको अक़्लका ठेकेदार मानते हैं, वे तुमसे कहेंगे कि अमेरिकाकी सरकार किसानोंकी जातिकी सरकार है, इसलिये वह किसानोंकी माँगको सुनती और उसे पूरा करती है। हिंदुस्थानकी सरकार तो विजातीय है, इसलिये वह यहाँके किसानोंकी बात नहीं सुनती। मगर नहीं, यह बात नहीं है। और मामलोंमें यह बात कुछ-कुछ सच भी हो सकती है, पर किसानोंके विषयमें नहीं। तुम्हारे ज़िलेके किसानोंके अफ़सर भी तुम्हारी किसानोंकी व्यथाकी कथा सुननेको तैयार हैं। तुम उनसे कहते ही नहीं, तो वे कैसे सुनेंगे। कोई अकेला कहता है, तो सरकार उसे नहीं भी सुनती; पर हाँ जब सब किसान उसी बातको अपनी सभा द्वारा कहते हैं, तब वह बात उसे सुननी ही पड़ती है।

मुझको अनुभव है कि मैंने अपने प्रांतके किसानी-विभागके काले और गोरे अफ़सरोंसे भी किसानोंके बारेमें जब-जब जो-जो सहायता माँगी है, तब-तब उन लोगोंने मुझको बड़ी उत्कंठा, उत्सुकता और प्रेमके साथ सहायता दी है। किसान भाइयो, तुम लोग आपसमें मिलकर अपने गाँवमें एक किसानी-सभा बनाओ। उस सभामें आठ या पंद्रह दिनोंके बाद सब लोग मिलकर किसानीके सुख-दुखोंकी चर्चा किया करो। उसकी सूचना अपनी सभा

द्वारा अपने ज़िलेके किसानीके अफ़सरोंको दिया करो। ऐसा करनेसे तुमको सरकारसे नई-नई वस्तुओंके अच्छे-अच्छे नमूने मुफ़्तमें भी, और दाम देनेपर भी मिलते रहेंगे, उनके बोने आदिकी रीतियाँ मालूम होंगी। उन रीतियोंको समझकर तुम उनके अनुसार काम करोगे, तो तुम्हारी किसानीकी उपज खूब बढ़ जायगी।

यही बात खेतोंकी तरक़्क़ीके बारेमें भी है। जब तुम बड़ी लागत लगाकर अपने खेतमें कुँआ खुदवाओ, बाँध बँधवाओ, तब पटवारीसे कहकर, और वह न सुने, तो अपने ज़िलेके डिपुटीकमिश्नर साहबको दरख़्वास्त देकर उसे ख़सरेमें अवश्य लिखा दो। बंदोबस्तके समय उसपर बाढ़ा नहीं किया जायगा। तुम जो तरक़्क़ीको लिखवाओगे ही नहीं, तो बंदोबस्तवालोंको उसका हाल कैसे मालूम होगा?

प्यारे किसान भाइयो, इस छोटे-से लेखमें लिखी हुई किसानीकी उपज बढ़ानेवाली बातोंको जो तुम आप पढ़ोगे, या उनको अपने गाँवके पटवारी, स्कूलमास्टर या और किसी लिखे-पढ़े आदमीके मुँहसे बार-बार सुनोगे, उनपर विचार करोगे, और मेरी बताई हुई युक्तियोंसे काम करनेकी हिम्मत करोगे, तो तुम्हारी किसानीकी उपज ज़रूर ही बढ़ जायगी, और तुम्हारे चित्तमें किसानीकी और-और नई-नई बातें जानने और सीखनेकी लालसा उत्पन्न

होगी। तुम्हारी लालसाका पता जो मुझको लग जायगा, तो मैं ऐसा प्रबंध कर दूँगा कि हर आठवें दिन तुमको घर-बैठे किसानीकी उपज बढ़ानेवाली अनेक बातें मालूम होती रहें। पर यह सब होगा तभी, जब कुछ करोगे। यों ही हाथ-पर-हाथ धरे, नसीबके गीत गा-गाकर, पुराने ढर्रेसे जो किसानी करते रहोगे, तो तुमको कुछ लाभ न होगा। आज दिन एक स्थानसे दूसरे दूरके स्थानपर पहुँचनेके लिये रेलगाड़ी बन गई है। रेलसे जानेवाले महीनोंकी राहको दिनोंमें तय करके तीर्थयात्रा करके अपने घर सुख-चैनसे लौट आते हैं। रेलको छोड़कर अगर कोई कहे कि हम तो पुराने ढंगसे पाँव-पाँव या बैलगाड़ीसे तीर्थ करनेको जायँगे, तो लोग उसको अज्ञानी और मूर्ख कहेंगे। इसी प्रकार आज भी जो लोग किसानीके नए-नए ढंगोंका अनादर करके पुराने ढंगसे ही उसे करना चाहते हैं, उनको नुक़सान उठाना पड़ता है। इसीलिये, किसान भाइयो, अब तुम भी किसानीके नए-नए ढंगोंका ज्ञान प्राप्त करो, उनका अपनी किसानीमें प्रचार करो, और उनसे ख़ासा लाभ उठाओ।

अब अंतमें एक और बात तुमको समझाकर आज मैं इस लेखको समाप्त करता हूँ। वह बात यह है कि तुम अपनी खेतीके क्षेत्रको—रक़बेको—बढ़ानेके पीछे मत पड़ जाओ। जितनी

धरती तुम्हारे पास है, उसकी खासी सेवा करके उसकी उपजाऊ शक्तिको बढ़ाओ। ऐसा करनेसे तुम्हारी और तुम्हारे बाल-बच्चोंकी भलाई होगी। मैं अपनी इस बातको एक उदाहरण—मिसाल—देकर समझाता हूँ। उसे खूब मन लगाकर सुनो, समझो, और काममें लाओ।

मैं देखता हूँ कि तुम लोगोंके पास खा-पीकर थोड़ी-सी बचत होते ही तुमको ज़मीन और मालगुज़ारोंको गाँव खरीदनेकी बात सूझती है। जिसके पास दो हलकी जमीन रहती है वह कुछ अपने पासकी और कुछ क़र्ज़ेकी रक़मसे एक हलकी धरती और खरीदता है। रुपए धरती खरीदनेमें लग जाते हैं। घरकी गउओंसे बैल पैदा नहीं किए जाते। नई ज़मीनके लिये बैल खरीदनेको रुपए पास नहीं रहते। तब यही होता है कि उन्हीं दो हलके बैलोंसे तीन हलकी धरतीकी जुताई की जाती है। जुताई ठीक-ठीक न हो पानेके कारण उपज अच्छी नहीं होती। उधर क़र्ज़का ब्याज और मालगुज़ारका लगान बढ़ता जाता है, कुछ दिनोंमें मालगुज़ार बक़ाया लगानकी और महाजन अपने क़र्ज़के रक़मकी नालिश कर डिगरी पा जाता है। मालगुज़ार अपनी डिगरीकी रक़ममें धरती छीन लेता है, और महाजन घर-दुआर, पशु और अन्यान्य संपत्ति। इस तरह किसान अपनी नादानी और अविवेकके कारण

नई ज़मीनके लालचमें पड़कर अपनी पुरानी धरती भी खो बैठता है। इसी तरह मालगुज़ार लोग, जब उनके पास दो-चार हज़ार या दस-पाँच हज़ार रुपएकी बचत होती है, तब दस-पाँच या पाँच-पचीस हज़ारका और क़र्ज़ लेकर दूसरे क़र्ज़से लद-फद लदे हुए मालगुज़ारोंके गाँवोंको खरीदकर अपनी स्थावर संपत्तिकी सीमाको बढ़ाते हैं। निर्धन मालगुज़ारोंकी निस्सत्त्व—उत्पादक-शक्ति-हीन—मरी हुई ज़मीनको खरीदते समय ये लोग इस बातपर तनिक भी विचार नहीं करते कि जो धरती अपनी दरिद्रताके कारण—निस्सारताके कारण—एकको दरिद्र बना चुकी है, वह हमारे पास आकर, पूरी जुताई और खाद पाए विना हमारी संपत्तिको कैसे बढ़ावेगी। परिणाम वही होता है, जो अवि-वेकीका होना चाहिए। थोड़े दिनोंमें क़र्ज़का ब्याज बढ़ जाता है, और रक़मकी अदाई नहीं की जा सकती। तब महाजन नालिश करता है, और इस प्रकार पुराने तथा घर-के सब गाँव चले जाते हैं। इसलिये मेरी सलाह यही है कि जब तुम्हारे पास खा-पीकर थोड़ी-सी बचत हो, तब उससे अपने पासकी धरतीमें बँधिया बँधवाओ, कुँआ खुदवाओ, उसे बढ़िया खाद दो। ऐसा करनेसे उसकी उपज बढ़ेगी, और उसको बेचनेसे तुम्हारे पास धन एकत्र होगा। विना क़र्ज़ लिए जब नई धरती और उसके लिये बैल-बीज

ख़रीदनेके लायक़ तुम्हारे पास बचत हो, तभी नई धरती ख़रीदो। ऐसा करनेसे तुम सुखी और धन-धान्यसंपन्न होगे।

बंदोबस्तके समय कम उपजके कारण मध्य-प्रदेशके किसानोंपर जिस प्रकार क़र्ज़ पाया गया था, उसका उल्लेख नीचे किया जाता है। उसे देखकर तुम सहजमें ही जान सकते हो कि जिनपर वह क़र्ज़ है, उनकी धरती उनके पास कैसे बच सकेगी, और आगे उनके बाल-बच्चोंकी क्या दशा होगी।

ज़िलेका नाम	नगदीका क़र्ज़ा	गल्लेका क़र्ज़ा
(१) जबलपुर	८६, ७१ ८२५)	मिल नहीं सका
(२) दमोह	ई०सं० १८९८में सरकारने बीचमें पड़कर २८ लाख माफ़ करा दिया	
(३) मॉंडला	२, ६१, १३९)	११०६८ खंडी
(४) सिवनी	३७,५०,०००)	४६०० खंडी
(५) सागर	३४, ४४, १२२)	४०,९५१नानी
(६) होशंगाबाद;	१, ५८०००००)	इसमें लगान-का बक़ाया भी शामिल है
(७) नीमाड़	५ ७०, ०३५)	
(८) रायपुर	२६, २६, ८१२)	

(९)	बिलासपुर	१९, ३५, ३६६)
(१०)	बालाघाट	१७, ५६, ८४५)
(११)	वर्धा	८६, ७१, ८२५)
(१२)	भंडारा	९१, ९७, ६२३)

मध्य-प्रदेशके किसान भाइयोंको सोचना चाहिए कि आजकल उनकी किसानीसे जो कम उपज होती है, उसको बढ़ाए बिना वे अपना यह भारी क़र्ज़ कैसे दे सकेंगे। अब तक उन्होंने जो असावधानी, जो उपेक्षा और जो लापरवाही की, उसका कड़ुआ और भयंकर फल यह हुआ कि उनपर भारी क़र्ज़ हो गया है। अब उनको अपनी किसानी-की उपज बढ़ानेमें तनिक-सी भी लापरवाही न करनी चाहिए। रात-दिन उपज बढ़ानेके उपायोंको ढूँढ़ते रहना चाहिए। उपज बढ़ानेवाले उपायोंको जो वे ढूँढ़ेंगे, तो वे उनको अवश्य ही मिल जायँगे, और उनको पाकर उन्हें काममें लानेसे वे निस्संदेह सुखी और धनवान् होंगे। यही बात अन्य प्रांतोंके ज़मींदारोंपर भी लागू है।

किसान भाइयो, एक बातकी सलाह मैं तुमको और देता हूँ। वह जो तुमको रुचे, तो उसे भी मानो। वह सलाह यह है कि अपनी जोतकी ज़मीनका लगान तुम बक़ाया कभी मत रक्खो। जिस तरह बने, उस तरह तुम सबसे पहले उसे अपने मालगुज़ार और ज़मींदारको दे दिया करो। तुम जो

ऐसा करते रहोगे, तो तुम्हारे गाँव में, या आसपास, जो दस-पाँच ऐसे आदमी बसते हैं, जो तुम-जैसे भोले-भाले किसानों-को उलटी-सीधी बाते समझाकर अपनी रोजी कमाते हैं, उनकी माया तुमपर नहीं चल सकेगी।

जो लोग मुक़दमेबाज़ीका रोज़गार किया करते हैं, उनके पास भूलकर भी तुम कभी मत जाओ। उनके पास तुम जो जाते-आते रहोगे, तो वे पहले तुमको तुम्हारे स्वार्थका झूठा लालच देकर तुमसे झूठे मुक़दमे चलवावेंगे, बादको तुमसे झूठी गवाही देनेका काम करावेंगे। अंतमें तुमको वे किसी ऐसे मामलेमें फंसा देंगे कि उनके पाँव पड़ते-पड़ते तुम्हारी नाक घिस जायगी, और वे तुम्हारा सब माल-असबाब लूट खायँगे। ऐसे लोगोंसे तुमको सदा बचे रहना चाहिए। मुक़दमेबाजीका रोज़गार करनेवाले ऊपरसे तो खीरेके समान एक-से देख पड़ते हैं—अपनी बातचीत-से तुम्हारे दिलपर यह बात जमा देते है कि वे तुम्हारे दुख-से दुखी होकर, अपना कामकाज छोड़कर तुमसे केवल अपनी खुराक-भर लेकर तुम्हारे कामके लिये तुम्हारे साथ आते-जाते है—पर उनके कलेजेके भीतर खीरेकी तीन फाँकोंके समान, उनके स्वार्थकी लकीरें अलग-अलग बढ़ती जाती हैं। वे सदा अपना स्वार्थ साधनेकी चिंतामें ही रहा करते है। फिर, अगर तुम्हारा शत्रु उनकी पूजा कर दे, तो

वे तुमको छोड़कर उसका थूक चाटने लग जायँगे। ये सब बुराइयाँ सोचकर तुम उनकी मीठी-मीठी बातें सुनकर कभी उनके पास मत बैठो। जब समय मिले, तब अपनी किसानी-की उपज बढ़ानेकी युक्तियाँ खोजनेमें ही उसे लगाया करो। तुम्हारी किसानीकी उपज बढ़नेमें ही तुम्हारी भलाई, तुम्हारा सुख और तुम्हारी शांति है। मेरे इस थोड़े-से उपदेशको जो मानोगे, तो ईश्वर तुमको सुखी और मालामाल कर देगा। ऐसा ही हो।

इति

गंगा-पुस्तकमाला
के
स्थायी ग्राहकों के लिये नियम

(१) स्थायी ग्राहक बनने की प्रवेश-फ़ीस सिर्फ़ ॥) है।

(२) पुस्तकें प्रकाशित होते ही—१५ दिन पहले दाम आदि का "सूचना-पत्र"* भेज देने के बाद—स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन काटकर वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं। ४-५ पुस्तकें एकसाथ भेजी जाती हैं, जिसमें डाक-ख़र्च में बचत रहे।

(३) जो पुस्तकें माला से अलग निकलती हैं उन पर भी स्थायी ग्राहकों को २५) सैकड़ा कमीशन दिया जाता है।

(४) स्थायी ग्राहक जिस पुस्तक को चाहें, लें; जिस पुस्तक को न चाहें, न लें। यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। वे चाहे जिस पुस्तक की, चाहे जितनी प्रतियाँ और चाहे जब, ऊपर-लिखे कमीशन पर, मँगा सकते हैं।

(५) बाहर की – हिंदुस्थान-भर की—सब पुस्तकें स्थायी ग्राहकों को -) रुपया कमीशन पर मिलती हैं।

(६) स्थायी ग्राहक की भूल से वी० पी० लौट आने पर डाक-ख़र्च उनको ही देना पड़ता है, और दो बार वी० पी० लौट आने पर स्थायी ग्राहकों की सूची से उनका नाम काट दिया जाता है।

---

* नई पुस्तकों में से यदि कोई या सब न लेनी हों, अथवा और कोई पुस्तकें मँगानी हों, तो "सूचना-पत्र" मिलते ही हमें पत्र लिखना चाहिए; जिसमें इच्छानुसार कारवाई कर दी जा सके। १५ दिन के अंदर कोई सूचना न मिलने पर सब नई पुस्तकें वी० पी० द्वारा भेज दी जाती हैं।

पुस्तक-सूची

अद्भुत आलाप १), १॥)
अयोध्यासिंह उपाध्याय ।)
आत्मार्पण ।)
इँगलैंड का इतिहास —
  प्रथम भाग १॥), २)
  द्वितीय भाग १॥), २)
उद्यान ॥=), १।)
एशिया में प्रभात ॥), १)
कर्बला १॥), २)
ख़ाँजहाँ १), १॥)
गधे की कहानी लगभग १), १॥)
चित्रशाला १॥), २।)
द्विजेंद्रलाल राय ।)
दुर्गावती लगभग १)
देव और बिहारी १।), १॥)
देवी द्रौपदी ॥)
देश-हितैषी श्रीकृष्ण =)
नंदन-निकुंज १), १॥)
नारी-उपदेश ॥)
पराग ॥), १)
पद्मांजलि ॥)
पूर्व-भारत ॥=), १।)
प्रायश्चित्त-प्रहसन ।)
प्रेम-प्रसून १।), १॥)
प्रेम-गंगा १।), १॥)
बहता हुआ फूल २॥)
बाल-नीति-कथा
  (प्रथम भाग) १), १॥)
  ,, (द्वितीय भाग) १), १॥)
बुद्ध-चरित्र ॥), १)
भगिनी-भूषण =)
भवभूति ॥=), १=)
भारत की विदुषी नारियाँ ॥)
भारत-गीत ॥), १)
भूकंप १), १॥)
मनोविज्ञान ॥), १)
मूर्ख-मंडली ॥), १)
मंजरी १)
रंगभूमि ४), ६)
रावबहादुर ॥), १)
लड़कियों का खेल ॥)
लक्ष्मी ॥)
वरमाला ॥), १)
विजया १॥), २)
विश्व-साहित्य १॥), २)
वंकिमचंद्र चटर्जी १)
सम्राट् चंद्रगुप्त ।)
सुकवि-संकीर्तन १।), १॥)
सुघड़ चमेली =)
संक्षिप्त शरीर-विज्ञान ॥), १)
हिंदी ॥=), १=)
हिंदी-नवरत्न ४॥), ५)

[जो पुस्तकें न मँगानी हों, उनके नाम कृपया काट दीजिए]